Chapter. 1

प्रथम अध्याय

शिवानीजी : जीवनी एवम् व्यक्तित्व

किसी भी कृति का आस्वाद करानेवाला कृतिकार कौन है यह जानना बहुत ही जरूरी है । कृतिकार का व्यक्तित्व हमेशा अपनी कृतियों में उभर आता है । जैसे किसी भी संगीत की धुन को सुनकर संगीतकार की परख होती है तथा किसी भी चित्र को देखकर चित्रकार का मूल्यांकन होता है वैसे ही साहित्य पर साहित्यकार का प्रतिबिंब अवश्य रहता है ।

साहित्यकार हमेशा समाज का दर्पण सा रहता है । समाज को सुधारने में साहित्यकार का हीस श्रेय है । शिवानीजी भी वैसे ही साहित्यकारों में से एक है । आधुनिक लेखिकाओं में गौरापन्त शिवानीजी का महत्वपूर्ण स्थान है ।

वैसे तो किसी भी महान व्यक्ति की जीवनी लिखना वाकई कठिन है । उनकी कृतियों से ही उनकी महानता का प्रदर्शन होता है ।

जन्म स्थान, मातापिता एवं वंश परिचय :-

शिवानीजी का जन्म सौराष्ट्र के राजकोट नगर में 17 अक्टूबर, 1923 (विजयादशमी) को प्रातःकाल में हुआ था । उनके अत्यन्त समृद्ध, सुसंस्कृत एवं उच्चवर्गीय परिवार के सभी गुण उनमें अवतरित हुए थे । शिवानीजी के पिता श्री अश्विनीकुमार पाण्डे राजकोट के राजकुमार कालिज में प्रोफेसर थे । राजकोट के पश्चात वे जुनागढ़, माणविदर, रामपुर, जसदन, ओरछा दतिया आदि राजधरानों के राजकुमारों के पारिवारिक विद्यागुरू रहे । अंग्रेज कलक्टर व कमिश्नरों के साथ उनकी दोस्ती भी थी अतः वे रामपुर के गृहमंत्री के पद पर भी नियुक्त हुए थे ।

शिवानीजी की माताजी का नाम लीलावती पाण्डे था । वे भी बहुत शिक्षित व विदुषी थी । उनके घर में एक समृद्ध पुस्तकालय था जिनमें, हिन्दी, गुजराती और संस्कृत के कई पुस्तक थे । मेधाणी उनके प्रिय लेखक थे । वे बहुत धार्मिक एवम् आधुनिक समाज के प्रति जागरूक थी । महिलाओं के शिक्षण तथा प्रगति के लिए बहुत उत्साहित थी । अत: लखनऊ का कालिज उनके योगदानों से बना था ।

चौबीस वर्षीय पुत्री और जामाता की नैनीताल के ताल में डूब जाने से शिवानी के पिता बहुत शोक विह्वल हो उठे । सीलोन की यात्रा के दौरान ही उन्हें "कारबंकल"[1] हुआ और शीघ्र ही वे चल बसे ।

शिवानीजी का वंश परिवार बहुत ही सुशिक्षित और समृद्ध था । शिवानी के नाना डॉ॰ हरदत्त पन्त लखनऊ के तत्कालीन ख्याति प्राप्त सिविल सर्जन थे । उनके नाना ने अपनी अस्पताल का रूप एक छोटी सी झोंपड़ी से दिया था जो आज भी बलरामपुर अस्पताल के नाम से सुविदित है । नाना की ही भाँति नानी भी लखनऊ के सामाजिक जीवन में बहुचर्चित थी । कुमाऊ समाज की दागबोल उन्हीं ने डाली थी ।

शिवानी के पितामह काशी विश्वविद्यालय में धर्म प्रचारक के पद पर थे, साथी ही वे संस्कृत के विद्वान और एल सफल वकील भी थे ।

शिवानी और उनके भाई-बहनों की शिक्षा भी बड़े सोचविचार के साथ की गई थी । उनके बड़े भाई त्रिभुवन की शिक्षा अंग्रेज गवर्नेस मिस ममफर्ड की देखरेख में हुई थी । बड़ी बहिन जयन्ती शांतिनिकेतन भेज दी गई थी वहीं उनके साथ शिवानीजी भी भेज दी गई । जयन्ती के अनुकरणीय आदर्श व्यवहार एवं अनुशासन के लिए स्वयं गुरुदेव ने उनका नाम रखा था । "भारतमाता" । वे आश्रम की वार्डन भी थी । शिवानीजी की शिक्षा-

1- शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान - पृ॰- 2
कु॰ शशीबाला पंजाबी

दीक्षा भी वहीं हुई थी । शिवानीजी के छोटे भाई का नाम है राजा, जो एक सफल पत्रकार भी है । इस प्रकार शिवानी का जन्म विद्यान्यास परिवार में हुआ था और उनका विकास सुसंस्कृत वातावरण में हुआ ।

बचपन – शिक्षादीक्षा :

शिवानी का बचपन रियासती वातावरण के कारण बड़े ही ऐश-आराम से बीता । सामान्यत: हरेक व्यक्ति बचपन में शरारती होता है । खेलकूद व मौज में ही बचपन को व्यतीत करता है । लेकिन शिवानीजी को बचपन से ही खेलकूद के प्रति कभी रुचि नहीं रही थी । बचपन से ही उन्हें पढ़ने का शौक बहुत था । एकबार "सरस्वतीचंद्र" छिपकर पढ़ने पर माँ की ठपकार व करारा चाँटा खाना पड़ा था । उनकी बचपन की उच्चस्तरिय शिक्षा उनके धर्मप्राण पितामह के आदर्शों से विचरित हुई थी । शिवानी बचपन में अपनी बहन के साथ मिसेज स्मिथ के पास उनके बंगले पर जाया करती थी । सुबह में शिवानी को मिर्जा घुड़ सवारी सिखाने आते थे ।

बारह वर्ष की अवस्था में शिवानी को भी अपने अन्य भाई-बहिनों के साथ शान्तिनिकेतन में विधिवत् विद्याभ्यास के लिए जाना पड़ा । शिवानी के पास साहित्यिक अभिरुचि तथा प्रतिभा अवश्य थी किन्तु संकोचशील स्वभाव के कारण अपने भाई बहनों की तरह शान्ति-निकेतन में लोकप्रियता हासिल नहीं कर पाई थी । लेकिन एक दिन गुरुदेव ने अंग्रेजी आशु कविता के कार्यक्रम का आयोजन किया जिसके उत्तर से ही शिवानीजी की काव्य प्रतिभा निखर उठी । सभी अध्यापकों एवम् गुरुदेव के मन पर उनकी साहित्यिक शक्ति की छाप उभर गई । गुरुदेव ने समस्या दी थी कि –

"इफ आई वर ए बोय"

शिवानी ने उसकी पूर्ति इस प्रकार की -

"इफ आई वर ए बॉय
व्होट वुड बिकम आफ द बॉय
आइ लव" [1]

निर्णायक स्वयं गुरुदेव ही थे । तालियों के गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने शिवानी को प्रथम पुरस्कार दिया, जो "नोबल पुरस्कार" से कम न था । उसी क्षण से शिवानी शान्तिनिकेतन में लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गई । जिधर से भी निकलती, सहपाठी कहते :

"हे हू इज द लकी वन" [2]

शान्तिनिकेतन में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे शीर्षस्थ सहृदय विद्वानों से उन्होंने ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा प्राप्त की । शिवानी ने कहा है कि "उन्होंने ही मुझे मेरे कान पकड़कर लेखनी की सही पकड़ सिखायी ।"[3] सुप्रसिद्ध सिने कलाकार श्री बलराज सहानी की भी छात्रा रही । सत्यजीत रे जैसे सिने निर्देशक उनके सहपाठी रहे है । शान्तिनिकेतन में ही उन्होंने रवीन्द्र संगीत और हिन्दुस्तानी संगीत सीखा । वहाँ उनके नृत्य शिक्षक मृणालिनी स्वामी नाथन (अब मृणालिनी साराभाई) तथा शान्ति दा से नृत्यविद्या की तालिम ली है ।

व्यावहारिक जीवन :

शिवानी जब बी॰ए॰ में थी तभी उनके मातापिता ने उनका विवाह निश्चित कर दिया । उनका विवाह पुरातन रूढिगत हुआ था । अपने पति को उन्होंने देखा भी नहीं था फिर भी वह संतुष्ट है । अपने पति के बारे में उन्होंने लिखा है कि - "उनकी अन्तिम सांस तक मुझे

1 - 2 "जालक" - शिवानी - पृ॰ 123

संतोष रहा कि शायद "लव मेरिज" करती तो भी इतना अच्छा पति नहीं मिलता ।" उनके पति श्रीयुत पन्त एक अच्छे पदाधिकारी थे । वे बड़े अच्छे ज़ादूगर भी थे ।

शिवानी के दो पुत्रियाँ और एक पुत्र है । जिनमें से मृणाल पाण्डे आधुनिक काल की उभरती हुई लेखिका है । दिल्ली के जिसस एण्ड मेरी कालिज में वह प्राध्यापिका है । मध्यप्रदेश की विभिन्न कालिज में तथा युरोप और अमरिका में भी वह अध्यापन का व्यवसाय कर चुकी है । इनके पति हवाई के इस्ट-वेस्ट सेण्टर में है ।

साहित्यिक प्रेरणा और प्रतिफलन :-

शिवानी को बचपन से ही साहित्य की ओर अधिक लगाव था अतः साहित्य की ओर प्रेरणा स्वयंभू थी । शिवानी जब नवीं-दसवीं कक्षा की छात्र थी तभी से ही वह "विश्व भारती" पत्रिका में लिखने लगी थी । उनके ही शब्दों में "छोटी छोटी घरेलू बातें लिखती थी । उन्होनें गयारह वर्ष की उम्र में पहली कहानी लिखी - "सिन्दूरी" । यह कहानी बंगला पत्रिका "नटखट" में छपी थी । शिवानी के अतिप्रिय लेखक प्रेमचन्द, टेगोर और गोर्की है । जिनकी रचनाए बचपन से आज तक पढ़ती रही हैं । आज के लिखनेवालों में उन्हें मन्नू भण्डारी, मंजूल भगत, तथा बिन्दु सिन्हा अच्छी लगती हैं । इस्मत गुगताई शुरु से ही उन्हें प्रिय रहे हैं । लखनऊ के आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में भी वे भाग लेती रही हैं । इसके साथ ही प्रायः हैदराबाद के तेलगू लेखिका सम्मेलन में अध्यक्षता के लिये आमन्त्रित होती रहती हैं । इसके अतिरिक्त आजकल दूरदर्शन के कार्यक्रमों के द्वारा भी वह समाज को पथदर्शन देती रही है । देश के अन्य क्षेत्रों में भी उन्हें पर्याप्त सम्मान मिला है ।

कृतियाँ और साहित्यिक व्यक्तित्व :-

शिवानी की कृतियाँ ही उनके व्यक्तित्व को प्रदर्शित करती हैं । 1980 में राज्य सरकार ने अपने [संस्मरण] को रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार से सम्मानित किया है । प्राय: पाँच वर्षों से हिन्दी की पत्रपत्रिकाओं में संस्मरण नियमित रूप से लिखती रही हैं । कहानी व उपन्यासों के के भाँति उनके संस्मरण भी प्रशंसनीय है । उन्होंने अपनी रचनाओं में भाषाकला, संस्कृति, अभिनय, यात्रा, सामाजिक समस्या, ग्रामीण जीवन आदि पर काफी लिखा है जो जालक, गवाक्ष, वातायन आदि के द्वारा सिद्ध होता है ।

शिवानी की सिद्धि एवम् सफलता पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी प्रसंशा की है । उन्होंने भी लिखा है "गौरा शान्ति-निकेतन की छोटी सी मुन्नी, मेरी परम प्रिय बहिन और छात्रा । बचपन में ही बड़ी सूक्ष्म बुद्धि की थी, उसकी दृष्टि बड़ी पैनी थी । ..... मेरे परम पारसी मित्र और गौरा के दूसरे अध्यापक पं० निताई विनोद रस्तोगी कहा करते थे कि यह लड़की अवसर मिलने पर बहुत प्रतिभाशालिनी सिद्ध होगी । वे गौरा की भाषा और प्रकाशन भंगिमा को तभी बहुत दाद देते थे ।" [1]

शिवानी की लोकप्रियता एवम् लेखन क्षमता का मूल्य कारण उनका भाषा ज्ञान है । बचपन से ही उन्हें कतिपय भाषाएँ सिखने का अवसर प्राप्त हुआ था । गुजराती बंगला, हिन्दी, संस्कृत अंग्रेजी आदि भाषाएँ वे पढ़ती भी हैं, उन्हें लिखती भी है और आसानी से बोलना भी जानती है । उनकी लेखिनी को इन्ही विविध भाषाओं के ज्ञान से गतिशील बनाया था । भाषा पर उन्हें अधिकार है और

1 = "मेरी प्रिय कहानियाँ - भूमिका आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

अपने हृदयगत भावों को ज्यों का त्यों प्रकट करने की उनमें क्षमता है । हिन्दी साहित्य में शिवानी ने अपना जो एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है उसका श्रेय शांतिनिकेतन को है । वे अपने जीवन में बहुत घूमी फिरी एवम् अनुभव सामग्री से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा की । सूक्ष्म दृष्टि से देखना और उसकी सहजता पाठकों के सामने सफलता से प्रस्तुत करना यही उनकी कला है ।

उन्होंने भी भाषा एवं बहुज्ञता के बारे में लिखा है, "मैंने बंगला के अनेक सुहावने मुहावरों से अपनी कहानियों को संवारा है । गुजराती की पाणेतर, बुंदेल खण्ड की कंकरेजी, कुमायूं की मखमी बेल तथा सोलह पाटों का लहराता लहंगा, बंगला के लाल पाड की गरद, सबकी विभिन्न छटाओं से अपने पाठकों को मोहने की चेष्टा मैंने की है । 1

उनके जीवन, अध्ययन और प्रतिभा आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद अब हम उनकी कृतियों के अध्ययन की ओर जायेंगे ।

कृतित्व :-

शिवानी ने साहित्यिक सभी विधाओं में अपनी सशक्तता का प्रमाण दे दिया है । उन्होंने उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखा-चित्र, संस्मरण एवम बालसाहित्य आदि लिखे हैं ।

1 = "जालक" शिवानी पृष्ठ - 151

हम अपनी सुविधा के कारण उनके साहित्य को निम्न विभाजनों में विभाजित कर सकते हैं ।

(अ) उपन्यास

(ब) कहानी

(क) संस्मरण एवं रेखाचित्र

(ड) बालसाहित्य

(अ) उपन्यास :

1. किशनुली (1979)
2. कृष्णवेणी (1981)
3. चल खुसरो घर अपने (1982)
4. विवर्त (1984)
5. भैरवी (1969)
6. विषकन्या (1977)
7. रतिविलाप (1977)
8. सुरंगमा (1975)
9. कैंजा (1962)
10. कृष्णकली (1962)
11. चौदहफेरे (1960)
12. मायापुरी (1957)
13. श्मशान चम्पा (1972)
14. गैंडा (1981)
15. रथ्या (1977)
16. माणिक (1977)
17. पुतोंवाली (1986)

18. कस्तूरी मृग (1987)
19. अतिथि (1987)
20. महौब्बत (1984)

(ब) कहानी संग्रह :

1. मेरी प्रिय कहानियाँ (1978) तीसरा संस्करण)
2. गेंडा (1978)
3. स्वयंसिद्धा (1977)
4. रथ्या (1977)
5. कैंजा (1975)
6. माणिक (1977)
7. पूतोंवाली (1986)
8. लाल हवेली (अप्राप्य)
9. टोला (अप्राप्य)
10. अपराधिनी (1974)

(क) संस्मरण एवम् रेखाचित्र :

1. झरोखा (1979)
2. दरीचा (1978)
3. वातायन (1975)
4. झूला (1979)
5. गवाक्ष (1975)
6. यात्रिक (1981)
7. आत्मय ललित निबंध (1984)
8. जालक (1979)

9. चरैवती (1987)
10. कस्तुरीमृग (1987)
11. आमादेर शांतिनिकेतन (1986)
12. चार दिन की (1978)
13. बिन्नू (अप्राप्य)
14. मंजीर (अप्राप्य)
15. क्यों (अप्राप्य)
16. गुरुदेव और उनका आश्रम (अप्राप्य)
17. हे दत्तात्रेय (अप्राप्य)

(ड) बाल साहित्य :

1. बचपन की याद (अप्राप्य)
2. राधिका सुन्दरी (1961 तीसरा सं.)
3. हर हर गंगे (अप्राप्य)
4. अलविदा (अप्राप्य)
5. स्वामी भक्त चूहा (1961 तीसरा सं.)
6. भूत अंकल (अप्राप्य)
7. आईसक्रीम महल (अप्राप्य)

निष्कर्ष :-

शिवानीजी की लेखनी संसार के सभी क्षेत्रों में चली है । बच्चों के मनोभावों से लेकर हरेक स्त्री पुरुष के मानस को बाँध रखना ही उनकी लेखनी की विशेषता है । उनकी कृतियों में स्त्री पुरुषों का प्रेम,

रोमांस और नारी जीवन की अनेक समस्याएँ प्रदर्शित हुई हैं । उनके व्यक्तित्व के भाँति कृतित्व भी इतना ही उच्च एवम उत्तम है । आप अभी भी नारी जीवन को संदेश दे रही हो अभी भी आप अपनी लेखन प्रवृति से विचलित नहीं हुई है ।

बहुत प्रसिद्ध कहावत है कि "होन हार वीरवान के होत चीकने पात" । शिवानी का जीवन और कृतित्व इस कहावत को सम्पूर्ण रूप से चरितार्थ करते हैं । आज के मनोवैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि व्यक्तित्व के निर्माण में अनुवंशिकता और वातावरण दोनों का हाथ रहता है । शिवानी के व्यक्तित्व और कृतित्व के पीछे उनकी आनुवंशिकता और उनका संपूर्ण परिवेश बहुत ही सक्रीय रहा है ।